

रविवार 7 सितंबर, 2025

विषय — आदमी

स्वर्ण पाठ: इब्रानियों 11: 6

" और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना [ईश्वर]"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 31 : 1, 5, 13, 14, 18, 19, 24

- ¹ हेयहोवा मेरा भरोसा तुझ पर है; मुझे कभी लज्जित होना न पड़े; तू अपने धर्मी होने के कारण मुझे छुड़ा ले!
- ⁵ मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूँ; हे यहोवा, हे सत्यवादी ईश्वर, तू ने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है॥
- ¹³ मैं ने बहुतों के मुंह से अपना अपवाद सुना, चारों ओर भय ही भय है! जब उन्होंने मेरे विरुद्ध आपस में सम्मति की तब मेरे प्राण लेने की युक्ति की॥
- ¹⁴ हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर भरोसा रखा है, मैं ने कहा, तू मेरा परमेश्वर है।
- ¹⁸ जो अंहकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं, उनके झूठ बोलने वाले मुंह बन्द किए जाएं॥
- ¹⁹ आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के साम्हने प्रगट भी की है!
- ²⁴ हे यहोवा परआशा रखने वालों हियाव बान्धो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 103 : 1-3

- ¹ हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- ² हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- ³ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,

2. भजन संहिता 19 : 7-10

- ⁷ यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;

- 8 यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है;
- 9 यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।

3. निर्गमन 17 : 1-7

- 1 फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला।
- 2 इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से क्यों वादविवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?
- 3 फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़के बालों और पशुओं समेत प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?
- 4 तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे पत्थरवाह करने को तैयार हैं।
- 5 यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में ले कर लोगों के आगे बढ़ चल।
- 6 देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उस में से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।
- 7 और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहां वादविवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं?

4. लूका 5 : 12-14

- 12 जब वह किसी नगर में था, तो देखो, वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था, और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा, और बिनती की; कि हे प्रभु यदि तू चाहे हो मुझे शुद्ध कर सकता है।
- 13 उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा: और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा।
- 14 तब उस ने उसे चिताया, कि किसी से न कह, परन्तु जा के अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे चढ़ा; कि उन पर गवाही हो।

5. लूका 17 : 5

- 5 तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, हमारा विश्वास बढ़ा।

6. मरकुस 10 : 46-52

- 46 और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था।

- 47 वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर।
- 48 बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
- 49 तब यीशु ने ठहरकर कहा, उसे बुलाओ; और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा, ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है।
- 50 वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया।
- 51 इस पर यीशु ने उस से कहा; तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं।
- 52 यीशु ने उस से कहा; चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया॥

7. मरकुस 11 : 23, 24

- 23 मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा।
- 24 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।

8. इब्रानियों 11 : 17, 19, 23-29

- 17 विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिस ने प्रतिज्ञाओं को सच माना था।
- 19 क्योंकि उस ने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुआओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।
- 23 विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उस को, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे।
- 24 विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया।
- 25 इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा।
- 26 और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उस की आंखे फल पाने की ओर लगी थीं।
- 27 विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डर कर उस ने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानों देखता हुआ दृढ़ रहा।
- 28 विश्वास ही से उस ने फसह और लोहू छिड़कने की विधि मानी, कि पहिलौठों का नाश करने वाला इस्त्राएलियों पर हाथ न डाले।
- 29 विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे।

9. 2 कुरिन्थियों 5: 7

⁷ क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 145: 32-7

हमारे गुरु ने अपने शिष्यों के समक्ष जो विश्वास का पहला सूत्र प्रस्तुत किया, वह था चंगाई, और उन्होंने अपने कार्यों द्वारा अपने विश्वास को सिद्ध किया। प्राचीन ईसाई चिकित्सक थे। ईसाई धर्म का यह तत्व क्यों खो गया है? क्योंकि हमारे धर्म की प्रणालियाँ चिकित्सा की हमारी प्रणालियों द्वारा कम या ज्यादा संचालित होती हैं। पहले मूर्तिपूजा सामग्री में विश्वास था। स्कूलों ने देवता में विश्वास के बजाय, ड्रग्स के फैशन पर विश्वास किया है।

2. 373: 1-5

यदि हम सभी नैतिक प्रश्नों पर ईसाई हैं, लेकिन भौतिक छूट के रूप में अंधेरे में हैं, जिसमें ईसाई धर्म शामिल है, तो हमें इस विषय पर भगवान में अधिक विश्वास होना चाहिए और उनके वादों के प्रति अधिक जीवित होना चाहिए।

3. 387: 27-32

ईसाइयत का इतिहास अपने स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान मन, द्वारा मनुष्य पर समर्थित शक्ति और रक्षा शक्ति के उदात्त प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को विश्वास और समझ प्रदान करता है जिससे वह खुद का बचाव करता है, न केवल प्रलोभन से, बल्कि शारीरिक से।

4. 298: 2-7

जीवन, सत्य और प्रेम ईश्वरीय विज्ञान की वास्तविकता हैं। वे विश्वास में डूब जाते हैं और आध्यात्मिक समझ में पूर्ण चमक प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार बादल सूर्य को छिपा लेता है, वह बुझ नहीं सकता, उसी प्रकार मिथ्या विश्वास अपरिवर्तनशील सद्भाव की आवाज को कुछ समय के लिए खामोश कर देता है, लेकिन मिथ्या विश्वास विश्वास, आशा और फल से लैस विज्ञान को नष्ट नहीं कर सकता।

5. 146: 13-5

भौतिक चिकित्सा ईश्वर की शक्ति के लिए दवाओं का विकल्प बनाती है - यहां तक कि मन की शक्ति - शरीर को ठीक करने के लिए। विद्वतावाद मनुष्य यीशु के दैवीय सिद्धांत के बजाय व्यक्ति से मुक्ति के लिए चिपक जाता है; और उसका विज्ञान, ईश्वर का उपचारात्मक एजेंट, खामोश है। क्यों? क्योंकि सत्य उनकी काल्पनिक शक्ति के भौतिक मादक द्रव्यों को त्याग देता है, और आत्मा को सर्वोच्चता प्रदान करता है। विज्ञान "अजनबी है जो आपके द्वार के भीतर है," याद नहीं है, तब भी जब इसके बढ़ते प्रभाव व्यावहारिक रूप से इसकी दिव्य उत्पत्ति और प्रभावकारिता साबित करते हैं।

दिव्य विज्ञान बाइबिल से अपनी मंजूरी प्राप्त करता है, और बीमारी और पाप को ठीक करने में सत्य के पवित्र प्रभाव के माध्यम से विज्ञान की दिव्य उत्पत्ति का प्रदर्शन किया जाता है। सत्य की यह उपचार शक्ति उस अवधि के लिए पूर्वकाल में रही होगी, जिसमें यीशु रहते थे। यह उतना ही प्राचीन है जितना कि "प्राचीन दिन"। यह सभी जीवन के माध्यम से रहता है, और पूरे अंतरिक्ष में फैला हुआ है।

दिव्य तत्वमीमांसा अब एक प्रणाली, एक ऐसे रूप में सिमट गई है जिसे हम जिस युग में रहते हैं, उसके विचारों द्वारा समझा जा सकता है और उसके अनुकूल बनाया जा सकता है। यह प्रणाली शिक्षार्थी को उस दिव्य सिद्धांत को प्रदर्शित करने में सक्षम बनाती है, जिस पर यीशु की चिकित्सा आधारित थी, तथा रोगों के उपचार के लिए वर्तमान में इसके अनुप्रयोग हेतु पवित्र नियमों को प्रदर्शित करने में सक्षम बनाती है।

6. 367: 30-19

क्योंकि सत्य अनंत है, त्रुटि को कुछ भी नहीं के रूप में जाना जाना चाहिए। क्योंकि सत्य अच्छाई में सर्वशक्तिमान है, त्रुटि, सत्य के विपरीत, कोई हो सकता है। बुराई है, लेकिन शून्य का प्रतिकार है। सबसे बड़ा गलत है, लेकिन सर्वोच्च अधिकार के विपरीत है। विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है। दिव्य विज्ञान जोर देकर कहता है कि समय यह सब साबित करेगा। सत्य और त्रुटि दोनों नश्वरता की आशंका से पहले से कहीं अधिक निकट आ गए हैं, और सत्य अभी भी स्पष्ट हो जाएगा क्योंकि त्रुटि स्वयं नष्ट हो गई है।

इस घातक मान्यता के विरुद्ध कि त्रुटि सत्य जितनी ही वास्तविक है, कि बुराई शक्ति में भले ही अच्छी हो, लेकिन उससे बेहतर नहीं है, और कि कलह सद्भाव की तरह ही सामान्य है, बीमारी और पाप के बंधन से मुक्ति की आशा भी तंत्रिका प्रयास के लिए बहुत कम प्रेरणा देती है। जब हम त्रुटि की तुलना में अस्तित्व के सत्य पर अधिक विश्वास करते हैं, पदार्थ की तुलना में आत्मा पर अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में ईश्वर पर अधिक विश्वास करते हैं, तो कोई भी भौतिक धारणा हमें बीमारों को ठीक करने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकती।

7. 226: 14-2

ईश्वर ने मानव अधिकारों का एक उच्चतर मंच निर्मित किया है, और वह भी दिव्य दावों पर। ये दावे किसी संहिता या पंथ के माध्यम से नहीं, बल्कि "पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों के प्रति सद्भावना" के प्रदर्शन में किए गए हैं। मानवीय संहिताएँ, शैक्षणिक धर्मशास्त्र, भौतिक चिकित्सा और स्वास्थ्य-विज्ञान, आस्था और आध्यात्मिक समझ को जकड़ लेते हैं। ईश्वरीय विज्ञान इन बंधनों को तोड़ देता है, और मनुष्य का अपने रचयिता के प्रति एकमात्र निष्ठा का जन्मसिद्ध अधिकार स्वयं को स्थापित करता है।

मैंने अपने सामने ऐसे बीमारों को देखा, जो एक अवास्तविक गुरु की वर्षों तक दासता करते हुए इस विश्वास के साथ जी रहे थे कि मन के बजाय शरीर उन पर शासन करता है।

लंगड़े, बहरे, गूंगे, अंधे, बीमार, कामुक, पापी, मैं उन्हें अपने विश्वासों की गुलामी से और फिरौन की शैक्षिक प्रणालियों से बचाना चाहता था, जो आज भी, पहले से ही, इस्राएल के बच्चे दासत्व में हैं। मैंने अपने सामने भयानक संघर्ष, लाल सागर और जंगल देखा; लेकिन मैंने ईश्वर में विश्वास के माध्यम से, मजबूत मुक्तिदाता सत्य पर भरोसा करते हुए, मुझे ईसाई विज्ञान की भूमि में मार्गदर्शन करने के लिए दबाव डाला, जहां बेड़ियां गिरती हैं और मनुष्य के अधिकारों को पूरी तरह से जाना और स्वीकार किया जाता है।

8. 496: 5-8

आप सीखेंगे कि क्रिश्चियन साइंस में पहला कर्तव्य ईश्वर का पालन करना, एक मन रखना और दूसरे को अपने जैसा प्यार करना है।

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है, जो विज्ञान के स्थल हैं।

9. 295: 5-15

भगवान मनुष्य सहित ब्रह्मांड का निर्माण और संचालन करता है। ब्रह्मांड आध्यात्मिक विचारों से भरा है, जिसे वह विकसित करता है, और वे मन के आज्ञाकारी हैं जो उन्हें बनाता है। नश्वर मन आध्यात्मिक को भौतिक में बदल देगा, और फिर इस त्रुटि की नश्वरता से बचने के लिए मनुष्य के मूल स्व को पुनर्प्राप्त करेगा। ईश्वर की स्वयं की छवि में बनाए गए नश्वर अमर की तरह नहीं हैं; लेकिन अनंत आत्मा सभी होने के नाते, नश्वर चेतना वैज्ञानिक तथ्य के लिए अंतिम पैदावार होगी और गायब हो जाएगी, और सही, और हमेशा के लिए होने का वास्तविक अर्थ प्रकट होगा।

10. 430: 6-7

देगा। विश्वास को अपनी सीमाओं को बढ़ाना चाहिए और पदार्थ के बजाय आत्मा पर आराम करके अपने आधार को मजबूत करना चाहिए।

11. 429: 27-28 (से,)

हमें अपने स्वामी की सभी बातों पर विश्वास करना चाहिए।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6